श्रीमती दीप्ति सहाय, पी.जी.टी. हिंदी

1. Smt. Deepti Sahay has his special identity because of his commitment, cooperative, commitment to the all round development of the students. For the development of language skills in the students, they have been collaborating with various technical exercises, building study materials and working as a processor in various workshops, training camps. Due to these characteristics, he has also received KVS Protsahan Award in 2006.

2. **हिंदी शिक्षिका श्रीमती दीप्ति सहाय की रचना का संभागीय राजभाषा पत्रिका भारती में प्रकाशन।**

न् अपावृणु
ालय संगठन

भारती

भावांजलि

(दिवंगत शिष्या 'कुशाग्रा' को समर्पित भाव-पुष्प !)

हरदम एक स्मित हास लिए
आंखों में एक विश्वास लिए,
तुम जब भी आकर मिलती थी
आशा की कलियाँ खिलती थीं।

कुछ टूट रहा था भीतर ही
यों रीत रहा था जीवन भी,
पर हार न मानी थी तुमने
जंग मौत से ठानी थी तुमने।

तन से नित दुर्बल होती थी
पल एक न साहस खोती थी,
था ध्येय तुम्हारा नभ छूना
कुछ अच्छा और सच्चा करना।

जो मात-पिता ने नाम दिया
उसको तुमने चरितार्थ किया,
जीवन की अंतिम साँसों तक
तुमने सब कुछ अव्वल ही दिया।

कर्मों से होती है पहचान
तेरा लघु जीवन साक्षी है,
मन से उन्नत होना चाहें
तो कुछ साँसें भी काफी हैं।

तुम थी भले शिष्या मेरी
पर बात बड़ी सिखला गई,
हर क्षण का सदुपयोग करो
यह राह हमें दिखला गई।

सच है कठिन सरल होना
निश्छल और तरल होना,
अंत ज्ञात हो पर फिर भी
एक क्षण भी हिम्मत न खोना।

कहते हैं विधि का लेख जिसे
उस सत्य का उस दिन भान हुआ,
जब तिल-तिल बुझते देखा तुम्हें
एक किरण का ज्यों अवसान हुआ।

सब कुछ पा जाने पर भी लोग
किस्मत को अपनी रोते हैं,
मुश्किल में भी आसान रहें
कुछ बिरले लोग ही होते हैं।

हूं धन्य मिला सान्निध्य तुम्हारा
अब स्मृतियाँ ही हैं शेष,
आजीवन श्रद्धानत रहूंगी
स्वीकारो भावांजलि विशेष।।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

दीप्ति सहाय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर लखनऊ, द्वितीय पाली

जो व्यक्ति अपना दोष जनता है उसे स्वीकार करता है, वही ऊंचा उठता है. हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम अपने दोषों को त्याग दें।

-सरदार वल्लभभाई पटेल